

ओम शांति,

बापदादा हम सभी बच्चों को समय का इशारा देते हुए अपनी स्थिति को कैसी बनानी है उसकी भी विभिन्न युक्तियाँ बताते रहते हैं। बाबा कि अवयक्त मुरलियां में या साकार मुरलियों में बाबा ने हमेशा येही भावना राखी कि मेरे हर बच्चे नंबर वैन में आये या १०८ कि माला में आजाये। सन्डे कि मुरली में भी हम सब ने बाबा के प्यार को महसूस किया कि बाबा कोई बच्चे को पीछे नहीं देखना चाहता है और उसके लिए बाबा १०८ कि कितनी भी लडिया लगानी पड़े वोह लडिया लगाने के लिए तैयार है। बाबा कि हम बच्च के प्रति कितनी ऊँची भावनाएं है, कितनी श्रेष्ठ भावनाएं है और यह भी सपस्ट कर दिया कि अब समय अनुसार हर बच्चा सम्पूर्णता को प्राप्त करें।

लेकिन सम्पूर्णता कि स्थिति को हमने पाया है या हम कितने नजदीक पहुंचे है उसकी पहचान क्या है? हमें पता चले कि हम सम्पूर्णता के नजदीक कितना पहुंचे है उसकी पहचान क्या होगी? तो उसकी पहचान येही है शुभ भावना। के हमारे अंदर से स्वयं के प्रति, प्रकृति के प्रति या अन्य आत्माओं के प्रति कितनी शुभ भावना निरंतर प्रवाहित हो रही है। अगर अभी तक भी कहीं ना कहीं सूक्ष्म में भावनाओं में किसी भी आत्माओं के प्रति कल्याण कि कामना के अलावा और कोई भावना है व्यर्थ कि भावना हो, नेगेटिव कि भावना हो तो इसका मतलब सम्पूर्णता से हम बहुत दूर है। सम्पूर्णता के नजदीक आत्मा कि सब से पहली निशानी येही रहती है कि हर आत्मा के प्रति उसकी निरंतर दिल कि दुआएं निकलती है, शुभ भावना शुभ कामना प्रवाहित होती रहती है। यह शुभ भावना कितने रूप से हम दे सकते है।

1. तो एक तो है **मनसा के द्वारा** संकल्पों में शुभ चिंतन करते हुए शुभ भावना को प्रवाहित करना
2. दूसरा है **वाणी द्वारा** किसी आत्मा के प्रति हमेशा उसकी विशेषता को देखते हुए उनके गुणों को देखते हुए उस बात को वर्णन करने में यह वाइब्रेशन्स भी जाते है क्योंकि वाणी के द्वारा भी जो प्रवाहित होते है वोह बहुत पावरफुल वाइब्रेशन्स होते है
3. और तीसरा **प्रेक्टिकल कर्म के द्वारा**। जब हम किसी को प्रैक्टिकल कर्म में किसी भी तरीके से सहयोग देते है, मदद करते है तो यह है हमारी शुभ भावना। तो प्रैक्टिकल कर्म के द्वारा।

तो तिन रूप से यह शुभ भावना को हम निरंतर प्रवाहित करते है या कर सकते है लेकिन उसके लिए कौन कर सकता है? सब से पहले तो शुभ भावना देने के लिए भावना क्रिएट कैसे होती है, भावनाएं हमेशा जैसे संकल्प होते है वैसी भावनाएं होती है। भावना और संकल्पों का बहुत गहरा कनेक्शन है। इसीलिए किसी ने दुनिया में बहुत सुंदर कहा है वाच आउट योर थॉट बिकॉज थे बिकम योर फिलिंग। कि हमें अपने संकल्पों के प्रति जागृत रहना जरूरी है क्योंकि जिस क्वालिटी के संकल्प होंगे वैसे ही भावना बनती जाती है और वोह भावनाएं वाइब्रेशन्स के रूप में प्रवाहित होती है। इसीलिए अगर भावनाओं को थिक करना हो तो पहले संकल्पों को थिक करना बहुत जरूरी है। अभी पिछले दो सालों से हर मुरली के अंदर किसी ने प्रकार से हमें बता ही रहे है कि बच्चे व्यर्थ से मुक्त हो जाओ। क्योंकि अभी तक अगर संकल्पों में व्यर्थ चलता रहेगा तो हमारी भावनाएं भी इतनी डेटोरिएट होने लगेगी या **किसी के प्रति हमारी भावना संकल्प नेगेटिव हो या व्यर्थ हो और फिर हम कहें कि हम शुभ भावना कर रहे है यह सम्भव नहीं है**। तो इसीलिए संकल्पों कि क्वालिटी और संकल्पों कि क्वालिटी के लिए शुभ चिंतन बहुत जरूरी है। कि हमारे मन के अंदर शुभ चिंतन कितना चलता है शुभ भावना तो बाद कि बात है लेकिन पहले मेरे मन कि अंदर शुभ चिंतन कितना है यह मुझे देखना है और शुभ चिंतन का स्टॉक होना जरूरी है। उसी के लिए बाबा हम बच्चों को कहते है रोज मुरली सुन्ना है, मुरली कभी मिस नहीं करना है क्योंकि हर रोज बाबा सुबह सुबह हमें देते है वोह है शुभ चिंतन करने का स्टॉक। जैसा चिंतन हम करते जायेंगे मुरली सुनते जायेंगे तो चिंतन का स्टॉक बढ़ता जाएगा हमारे पास। ताकि व्यर्थ और नेगेटिव के आधार पर नहीं चलें। और तब हमारी स्थिति शुभ चिंतक कि हो जाएंगी और शुभ चिंतक हुए तो

शुभ भावना प्रवाहित होना आसान है।

तो यह सब का आपस में बहुत गहरा कनेक्शन है। अब शुभ चिंतक बन्ने के लिए या शुभ चिंतन करने के लिए भी सब से पहले स्वयं के प्रति यानि हमारी आत्मिक स्थिति यह फाउंडेशन है। **अगर देह अभिमान में होंगे, देह भान में भी होंगे तो शुभ चिंतन नहीं चल सकता है, शुभ चिंतन तभी चलेगा जब मेरी आत्मिक स्थिति होंगी, आत्म अभिमानी स्थिति में होंगे या देहि अभिमानी स्थिति होंगे तो ही शुभ चिंतन अपने आप चलेगा।** देह अभिमान में है, देह धारियों कि याद में है और फिर हम कहें कि मैं शुभ चिंतन कर रही थी यह संभव नहीं है। तो फाउंडेशन में आत्मिक स्थिति इसीलिए **बाबा कहते हैं कि जो भी सामने आये उसको आत्म भाव से देखो आत्मा समझ करके देखो तो आपकी भावनाएं स्वतः प्रवाहित होंगी।** तो स्वयं कि स्थिति आत्म स्वरूप कि हो, आत्म भाव में होना तब शुभ चिंतन और शुभ चिंतन है तो शुभ भावनाएं अपने आप प्रवाहित होंगी।

साथ ही साथ यह शुभ चिंतन करने के लिए सब से पहला खजाना हो हमारे पास होना चाहिए वोह ज्ञान का खजाना है। जितना हमारा ज्ञान का खजाना अधिक होगा तो शुभ चिंतन चलना आसान है। अगर ज्ञान का खजाना नहीं है तो जरूर है व्यर्थ का खजाना बढ़ जाएगा। यानि फालतू बातें अंदर में भर जाएंगी तो इसलिए ज्ञान का खजाने से पहले संपन्न बनने कि आवश्यकता है। दूसरी बात कि जब जैसे दुनिया के अंदर भी कहा जाता है कि शरीर कि कर्मेन्द्रिय को जितना हम फ्लेक्सिबिलि मोड़ सकते हैं उतना व्यक्ति हेल्थी माना जाता है। लेकिन मानलो कि यह हाथ अकड़ गया और यह फ्लेक्सिबल हो ही नहीं मूड ही नहीं सकता, मुड़ना नहीं आता है या इतना अकड़ जाता है तो बीमार माने जाते हैं इसी तरह जिस दिशा में मैं अपने संकल्पो को मोड़ना चहुँ उसी वख्त मैं उसे मोड़ सकूँ उतना फ्लेक्सिबल हो जाऊँ तब हम स्पिरिचुअली हेल्थी है। लेकिन अगर मैं अपने संकल्पो को मोड़ नहीं पा रही हूँ वही बार बार विचार कोई बुरी घटना को लेकर के, कल कि बातों को ले कर के वही बातें अंदर में घर गयी है और हटती नहीं है और मैं चाहती हूँ कि मैं शुभ भावना हूँ लेकिन मैं अपने विचारो को मोड़ नहीं पा रही तो जितना हाथ पैर को मोड़ेंगे हेल्थी है मोड़ नहीं सकते हैं तो बीमार है।

तो हम अगर अपने मन को संकल्पो को जिस दिशा में मोड़ न चाहें मोड़ नहीं सकते तो उसको क्या कहेंगे? क्या कहेंगे? बीमार। स्पिरिचुअली, आध्यात्मिक रूप से, मानशिक रूप से वोह बीमार है जो ना चाहते हुए भी बार बार उसका मन उसी दिशा में खिंचा जा रहा है मोड़ना चाहते हुए भी मोड़ नहीं पा रहे हैं। तो **इसीलिए जितना हमारे पास ज्ञान के खजाने के स्टॉक है अंदर में, यह खजाना जितना भरपूर होगा उतना हम अपने संकल्पो को जिस दिशा में मोड़ना चाहे आराम से मोड़ सकेंगे और उतना स्पिरिचुअली हेल्थी रहेंगे।**

इसीलिए पहले मोड़ने कि शक्ति। इसीलिए बाबा कहते हैं जो रॉय सोना होता है वोह मुड़ जाता है जब उसमें एलाय मिक्स है तो मूड़ नहीं सकता हार्ड हो जाता है। थिक इसी तरह मेरी सम्पूर्णता कि स्थिति कितनी नजदीक है उसकी पहचान कि मेरे संकल्पो को जिस दिशा में चाहूँ आराम से मोड़ सकूँ और उसी दिशा में ले जा सकूँ। चाहे मुझे जिस आत्मा के प्रति बेहद के भावना रखते हुए सारे संसार कि आत्मा के प्रति कल्याण कि भावना को प्रवाहित करना है एक नेचुरल रूप से यह प्रवाहित होने लगे। मोड़ने कि शक्ति वोही रियल गोल्ड बना है तो मोड़ना आसान है। अगर हमने अभी अपनी स्थिति पर ध्यान नहीं दिया तो सम्पूर्णता बहुत दूर चली जाएंगी मुझसे। और अब समय अनुसार मुझे अपने आप को बार बार देखते हुए भी यह पहचान अपने अंदर महसूस करना है कि मेरी सम्पूर्णता कि स्थिति है या नहीं।

तो यह निशानियां हैं कि मेरे विचार मोड़ सकते हैं? मेरा मन मोड़ सकता है? जिसको दुनिया के अंदर बाबा कई बार हम बच्चो को एकसाम्प्ले देते हैं कि **बच्चे आप के जड़ चित्र भक्ति में भी सबकी मनोकामना को पूर्ण करने वाले हैं इसीलिए**

लोग शुभ भावना से आते हैं, कामनाएं लेकर के आते हैं अगर वोह जड़ चित्र कर सकते हैं कलयुग अंत तक तो आप तो चैतन्य में। तो इसीलिए हर आत्मा के प्रति आपको यह शुभ भावना को निरंतर प्रवाहित करना है। इसीलिए बाबा ने इस साल में जो पहली मुरली चलाई जब बाबा हम बच्चों से क्या चाहता है? दादी जी ने भी अपने अव्यक्त दिन पर उस समय दादी जी ने विशेष यही इशारा दिया था कि अब मनसा सेवा को बढ़ाना है, वाणी कि सेवा हमने बहुत कर लिया, भाषण बहुत कर लिया लेकिन अभी भासना देना है।

भासना का मतलब क्या होता है? शुभ भावना से अनेकों को फिल करना दूसरी शब्दों में कहे तो शुभ भावना क्या होती है कि हर आत्मा के प्रति रहम कि भावना। चाहे वोह बाबा का बच्चा है या नहीं है लेकिन जिस तरह बाबा के बच्चे जब हमें मिलते हैं मानलो कहीं बहार गांव गए और रास्ते में बस में ट्रेन में कहीं भी हमें कोई बीके मिल जाता है तो एक अपनेपन कि फिलिंग नेचुरल आती है और अपनेपन कि फिलिंग के कारण? उसका बेज देखा अच्छा आप जाते हैं सेप्टर पर यह अपनापन अगर वोह व्यक्ति खड़ा है और आपके पास सीट है आप तुरंत जगह करेंगे और उस बीके को बिठा देंगे यह बीके अपना भाई है। तो जिस तरह से अपने भाई बहने के प्रति यह फिलिंग आती है एक रहम कि भावना आ जाती है तुरंत ही आप उसको जगह करके बिठा देते हैं अब समय यह है बाबा कहते हैं बेहद कि वृत्ति हो कि हर आत्मा बाबा का बच्चा है।

बाबा कि वोह बात याद आती है यह एकसाम्पल सब ने सुना होंगा जब बाबा के बारों में एक न्यूज पेपर वाले ने बहुत उल्टा सीधा पेपर में डाला था और भाई बहने न्यूज पेपर ले करके बाबा के सामने आये कि बाबा इस व्यक्ति के सामने हमें केस करना चाहिए। वैसे कैसे लिख सकता है आपके बारों में। तो आप सब को पता है बाबा ने उस समय क्या कहा था। कि बच्चे केस नहीं उस बच्चे को एक टोली का बॉक्स दे के आओ। कितनी शुभ भावना। उसको टोली का बॉक्स दे करके आओ और उसका धन्यवाद दे करके आओ। सभी हेरान हो गए कि बाबा ने ऐसा क्यों कहा? कि उसके ऊपर केस नहीं करना है और उसको टोली का बॉक्स देने कि बात कही और उसको धन्यवाद देने कि बात कही तब बाबा ने रहस्य बताया कि बच्चे यह आधा पेज जो डाला है उसने पेपर में यह आधा पेज अगर आप कुछ ज्ञान कि बातें डलवाने जाते थे तो कितने हजार रुपये लगते थे? कितना पैसा खर्च करते थे आप लोग? तब भी आधा पेज नहीं डाल सकते थे। आधा पेज डालना मतलब उसने आधा पेज जो भी निंदा ग्लानि जो भी किया हो लेकिन लोग बढ़ेंगे और वोह निंदा कि बातें पढ़ने के बाद वोह सोचेंगे देखें तो सही यह संस्था सचमुच ऐसी है और वोह देखने के लिए आयेंगे। तो यह बच्चे ने भले गलत बातें डाल कर भी सेवा ही कि है क्योंकि जितने लोग पढ़ कर के आयेंगे और जब यहाँ देखेंगे कि ऐसी कोई बात है ही नहीं तो वोह बाबा के बच्चे बन जायेंगे। तो कितनी आत्माओं को बाबा का बच्चा बनाने के लिए निमित्त बनेगा यह तो सोचो। इसीलिए उसका धन्यवाद करना चाहिए। आज उसने भले ही ग्लानि कि बातें लिखी है लेकिन एक दिन आएगा यह बच्चे बाप कि प्रत्यक्षता लिखने के लिए भी निमित्त बनेगे। कितनी शुभ भावना। तब बाबा ने यह स्लोगन दिया था - निंदा हमारी जो करें मित्र हमारा होय। अगर वोह निंदा नहीं करता था तो लोग बढ़ते नहीं इसीलिए अकल्याण में भी कल्याण समाया हुआ है तो वैसे ही हैम सभी के सामने भी जब भी कोई परिस्थिति आये, जब भी कोई बात आये तो उस अकल्याण में भी अगर हम कल्याण को देख सके तो येही तो शुभ भावना है। बातें सुन कर के या पढ़ कर के या कोई आकर के बताता है कि फलाना व्यक्ति आपके बारों में ऐसा ऐसा केह रहा था, कर रहा था तो आपका माइंड डिस्टर्ब हो जाता है या उसके प्रति येही निकलती है शुभ भावना। यह स्थिति अगर आ गयी है माना में सम्पूर्णता के नजदीक पहुँच गयी। यह पहचान है।

लेकिन अगर में डिस्टर्ब हो जाती हूँ कि उसने ऐसा कहा और ऐसा कहने के बाद में चार बातें उसके बारों में भी बुराई सुना दूँ तो में सम्पूर्णता के नजदीक हूँ या दूर हूँ? क्या है? दूर है ना। नजदीक नहीं है। और समय अनुसार हमें दूर जाना है

या नजदीक जाना है? नजदीक जाना है। तो इसीलिए हर बात में मुझे कल्याण का भाव दिखाई दें, अकल्याण में भी कल्याण दिखाई दें और मैं उस आत्मा के प्रति भी विशेष योग करके उसको शुभ भावना का दान दूँ। देखु वोह परिवर्तन होता है या नहीं होता है। जरूर परिवर्तन हो जाएगा। गेरन्टी है ट्राय करके देखो। मेने एक विशेष यह किया था कि आत्मा के साथ ऐसा बोल चल हो गया उस समय डिस्टर्ब जरूर हुई माइंड में, यह नहीं कहती कि डिस्टर्ब नहीं हुयी, जब मालूम पढ़ा तब। फिर मेने सोचा कि क्या किया जाए? और उस समय येही अंदर में आया कि अमृतवेले उसको योग दान, और जब मेने विशेष दान दिया उसको बाबा के सामने इमर्ज करके, बाबा के सामने जैसे उस आत्मा से क्षमा मांग ली कि चलो तुमने जो कहा, और इस तरह से क्षमा मांग करके मेने उसको योग दान दिया बहुत अच्छी वाइब्रेशनस दिया दूसरे ही दिन उसका मुझे रिसल्ट मिलता है कि वोह व्यक्ति आकरके मुझे सॉरी करके जाता है।

तो यह समय है प्रयोग करने का ना कि नेगेटिव चलाने का। कि उसने ऐसा कहा इसलिए मैं भी दो चार शब्द और छोड़ कर के केह दूँ नहीं यह बाबा नहीं चाहता है। अभी समय अनुसार बाबा भी यह चाहता है कि मैं १०८ कि माला का मनका बनू यह बाबा कि भावना है हमारे प्रति, हर एक ब्राह्मण के प्रति भावना है। जब बाबा मुझे में रखता है तो मैं अपने आप को अपने कर्मों से या अपने बोल चाल से या अपने मनसा संकल्पों से निचे क्यूँ उतारू? जितना हम नेगेटिव सोचते जायेंगे आप सोचो एक कल्पना करो कि जितना नेगेटिव कोई आपको क्यूँकि समय अनुसार बाबा ने कहा है कि पेपर चारो और से आएगा और जब चारो और से आएगा तो आपको अधिकतर यह बातें सुनने को मिलेगी क्यूँकि दुनिया के अंदर इतना टेंसन है कि आप भलें निर्दोष होंगे लेकिन लोग आप को दोषी मान कर के भी उल्टा सीधा बोलेंगे आपके और जब आपको पता चलेगा कि उसने मेरे लिए ऐसा बोला और हम भी नेगेटिव और व्यर्थ चलना चालू करेंगे तो जो बाबा कहते हैं कि बहुत काल का अभ्यास चाहिए अंत समय हर परीक्षा को पार करने के लिए बहुत काल का अभ्यास चाहिए वोह बहुत काल का अभ्यास मेरा कौनसा हो रहा है? व्यर्थ सोचने का? तो जो व्यर्थ सोचने का बहुत काल का अभ्यास मेरा हो रहा है वोह मुझे अंतिम समय डिप्रेशन का सिकार बनाएगा या मुझे सम्पूर्णता कि और ले जाने के लिए निमित्त बनेगा और उस समय में किसी को दोषी नहीं बना सकती कि इसने ऐसा कहा इसलिए मेरे को भी ऐसा सोचना पड़ा। बाबा कहेगा यह तुम्हारा कर्तव्य तो नहीं है उसने किया जरूर उसकी मनोस्थिति निचे थी तो तुम उससे भी निचे आगये? यह कहा कि समजदारी हो गयी? भावार्थ यह है कि शुभ भावना जब देने कि बात आती है तो हमें अपने आप को बहुत ऊपर उठाना होगा। इतना ऊपर उठा दें जैसे कोई व्यक्ति एक ऊँची छोटी पर पहोच जाता है तो काफी एरिया उसको दिखाई देता है निचे ग्राउंड पर खड़ा रहेगा तो बहुत लिमिटेड एरिया दिखाई देगा। इसी तरह मुझे भी अपनी मानसिक स्थिति को इतना ऊपर उठाना है कि मुझे कोई कमी कमजोरी ना दिखें।

जैसे कोई प्लेन से देखता है निचे तो खड्डा थोड़ी ही दिखाई देता है, कांटे है रास्ते में यह कुछ नहीं दिखाई देता है। इतनी सुंदर हरयाली दिखाई देगी, यह नहीं दिखाई देगा खड्डे हैं, कांटे हैं यह तो निचे आप जायेंगे तो आपको दिखाई देगा। लेकिन ऊपर से देखेंगे तो कैसा दिखेगा दृश्य? थिक इसी तरह मुझे अपनी मानसिक स्थिति को ऐसा ऊपर उठा देना है कि मुझे उस व्यक्ति कि कमी कमजोरी दिखाई ना दें, और उसकी विशेषताएं दिखाई देने लगे। इतना सुंदर उसका आदि स्वरूप, अनादि स्वरूप, सम्पूर्ण स्वरूप कितना सुंदर है। बाबा जब हम बच्चों को देखते हैं वतन के अंदर तो हमें यह स्वरूप में थोड़ी ही देखते हैं? जब गुलझार दादी या कोई भी संदेशी देखती है सभा देखती है तो वोह सभा कौनसी? यह सभा देखती है? नहीं। वोह हर आत्मा के जो सम्पूर्ण स्वरूप है आदि अनादि स्वरूप है वोह सम्पूर्ण स्वरूप में हर एक को बाबा देखते हैं, इसीलिए तो बाबा इतना प्यार करते हैं हमसे।

तो हमें भी हर आत्मा को अपने आदि, अनादि सम्पूर्ण स्वरूप में देख करके उस रूप से उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। यानि इतनी बेहद कि वृत्ति मेरे अंदर हो जितना हद में हम आयेंगे तो हमें खड्डे भी दिखाई देंगे, कांटे भी

दिखाई देंगे, यह भी दिखाई देंगे हर बात में कमजोरी या कमी महसूस होने लगेगी। यह आत्मा में यह कमी है, यह आत्मा में यह कमजोरी है तो मेरी बुद्धि या वृत्ति ऊपर उठ नहीं पायेगी। और इस सीजन कि पहली मुरली में बाबा ने हम बच्चो को येही कहा है वृत्ति द्वारा वायुमंडल को परिवर्तन, वृत्ति द्वारा वाइब्रेशन्स को परिवर्तन करना यह स्वरूप बाबा मेरा देखना चाहते है। तो जब यह स्वरूप मेरा देखना चाहते है तो इससे सपस्ट होता है कि हम अपनी वृत्ति को ऊपर उठाले। और उसके लिए जितना अंदर में दुआओं का खजाना अपने पास होगा वोह देना शुरू कर दो। देने से बढ़ता है जब बाबा ने भी यह हिसाब हमें सिखा दिया कि देने से बढ़ेगा। और दूसरा तरीका बढ़ाने का सुनाया कि बिंदी लगाओ तो बढ़ेगा। जितनी बिंदी लगाते जाओ बढ़ता जाएगा खजाना। तो हमें भी चाहे कोई सौ बार बुरा व्यवहार करता है तो बिंदी लगाते जाओ तो आपका खजाना तो बढ़ता जाएगा, आप को कितने भाग्यवान बन जायेंगे, है ना?

आज एक डॉक्टर होता है जब उसने पेशेंट के ऊपर ऑपरेशन किया तो उसको पता है कि पेशेंट को यह ऑपरेशन के बाद कितना दर्द हो सकता है, उसको एहसास है है ना? लेकिन वोह जब पेशेंट के पास आता है तो क्या कहता है? क्या कहता है? अरे कल से तो आज थोडा तकलीफ हुई होगी लेकिन कल से तो आप एक दम दौड़ना चालू कर देंगे, आप एकदम देखना कैसे अच्छे हो जायेंगे सब से बात करने लगेंगे। माना कितना हिम्मत देना जब कि अंदर सब कुछ जानना और जैसे दूसरे दिन आता है तो डॉक्टर पूछता है आप थिक हो गयी? तो पेशेंट कि दस कमप्लैन होगी रात में नींद नहीं आयी, ऐसा हुआ, यहाँ दर्द हो रहा था, यहाँ ऐसा हो रहा था, जलन हो रही थी कितनी बातें कहते है और डॉक्टर अंदर में जानता है सब कुछ हुआ होगा उसको फिर भी क्या कहते है? एक दो दिन जलेगा फिर देखना आप फिर जब थिक हो जायेंगे ना तो कुछ भी नहीं होगा। माना दस दिन बाद जो स्थिति आने वाली है वोह तीसरे दिन विसुआलाइस कराना सिखा देता है और जैसे ही वोह विसुआलाइस करना आरम्भ कर देता है तीसरे दिन डॉक्टर को कहेगा थिक था आज तो थिक था। मेंटली कन्वीन्स कर दिया गया तो थिक हो गया उसको वोह फिलिंग नहीं आयी और थिक होने लगा। तभी तो कई बार डॉक्टर जब बीके को देखते है तो क्या कहते है? चमत्कार है ऐसा तो नहीं होता है, आप लोगो को कैसे दर्द नहीं हुआ मालूम नहीं, नहीं तो दूसरे बहार वाले अगर होते थे ना तो कितनी उनकी कंप्लाइंस होती थी लेकिन आप लोगो कि येही तो एक बात है कि आप लोगो को दर्द भी नहीं होता है। क्यूंकि हमारे साथ एक तो परमात्म शक्ति है, हम अपने शरीर पर भी शुभ भावना का, प्योर वाइब्रेशन्स का प्रयोग करते है, और अगर अपने शरीर पर करते है तो साथ साथ में दूसरे के ऊपर भी शुभ भावना का रिजल्ट, दुनिया में भी देखा गया है कि जब कोई शुभ भावना रखता है तो बहोत अच्छा रिजल्ट निकलता है। इसीलिए तो आजकल दुनिया में भी इस बात कि जागृति आने लगी है कि लोग अभी इस प्रकार कि किताबे लिखना शुरू कर दी है कि पॉवर ऑफ थॉट्स, पॉवर ऑफ माइंड, पॉवर फ़ो पाजिटिविटी। यह किताब लिखने लगे है यानि यह जागृति दुनिया में भी आ रही है तो हम बच्चो के अंदर तो कितना उसका प्रैक्टिकल स्वरूप होना चाहिए तब हम कर सकेंगे।

शुभ भावना कौन दे सकता है? शुभ भावना वही दे सकता है जो अंदर से भरपूर होगा। जो अंदर से भरपूर है, संतुष्ट है, जिसकी कोई चाहिए चाहिए कि चाह नहीं है वही दे सकता है। अगर मुझे ही अपेक्षा है कि फलाना मेरे बारें में अच्छा सोचे, फलाना मेरे साथ अच्छा व्यवहार करें, फलाना मेरे लिए यह अच्छा कहे यह अपेक्षा जितनी रखेंगे तो अपेक्षा से कभी प्राप्त होने वाला नहीं है। और जब अपेक्षा से नहीं मिलता है तो और भी फ़र्स्टरशन आने लगता है। इसीलिए अपेक्षा रखने के बजाये में अपने व्यवहार के अंदर इतना सुंदर पाजिटिविटी का वाइब्रेशन्स फैलाऊं ताकि उस आत्मा के अंदर परिवर्तन अपने आप हो जाए। वोह अपेक्षा ना रखें लेकिन वोह एनर्जी को फलो होते हुए महसूस करें। जितनी एनर्जी फलो होने देंगे, यह एनर्जी है बहोत पावरफुल एनर्जी है, शुभ भावना शुभ कामना कि इतनी पावरफुल

एनर्जी है कि जितनी यह फलो होने लगेगी उतना ही आपको इतने सुंदर रिजल्ट महसूस कराएंगी। लेकिन जितना उसको फलो नहीं होने देंगे उसको बाँध के रख देते हैं अंदर में, भावनाओं को बेहने नहीं देते उतना ही स्वयं को भी तकलीफ मिलती है और हमारे आस पास वालों को भी हम तकलीफ देते हैं।

तो इसीलिए **बाबा अभी हम बच्चों से येही चाहते हैं कि वाणी द्वारा भी किसी का उमंग उत्साह बढ़ाओ, किसी को हिम्मत दो, किसी को साहस प्रदान करो, निर्भय बनाओ। वाणी के अंदर ऐसी भासना एक दूसरे के प्रति देना शुरू कर दो और इसी तरह कर्म या व्यवहार के अंदर भी किसी को भी बहुत अच्छी तरह सहयोग दें, स्नेह दें यह देने आरम्भ करेंगे इसी का नाम है शुभ भावना।** शुभ भावना खाली मनसा से नहीं होती है, हमारे बोल से भी होती है, कर्म से भी होती है, व्यवहार से भी होती है। और अगर व्यवहार में प्रैक्टिकली दिखाई ना देता हो तो कोई नहीं मानेगा कि आप मनसा के अंदर शुभ भावना रख कर के उसके प्रति योग दान कर रहे हैं। इसीलिए प्रैक्टिकल कर्म, प्रैक्टिकल व्यवहार यह बहुत सुंदर प्रमाण है इसीलिए किसी ने कहा है एकशन स्पीक लॉउडर थैन वर्ड। कि वोह प्रत्यक्ष सबूत है कि हां इसका व्यवहार भी हर एक के साथ बहुत मधुरता वाला है, बहुत प्रेम स्नेह का है। तो यह प्रत्यक्ष प्रमाण हमारी शुभ भावना है, बाकि खाली हम उसके लिए योग दान करते रहे और प्रैक्टिकल व्यवहार में जब आये तब व्यवहार में वोह मधुरता ना हो, वोह स्नेह ना हो, सहयोग देने कि भावना ना हो तो कैसे माने कि हम योग दान दे भी रहे हैं कि नहीं? कहने से नहीं होता है यह प्रैक्टिकल कर्म में आने कि चीज है। मनसा तो बहुत दूर कि बात है बहुत ऊँची स्थिति है इसलिए प्रैक्टिकल कर्म में होंगी व्यवहार में होंगी, बोलचाल में होंगी तब जा करके मनसा कि यह स्थिति बनेगी शुभ भावना कि। अगर निचे के लेवल पर नहीं है तो ऊपर के लेवल पर आप पहुँचे गए ही कैसे? तो एक प्रकार का इमेजिनेशन हो जाता है कि हम शुभ भावना सब के लिए दे रहे हैं शुभ भावना सब के लिए दे रहे हैं वास्तव में प्रैक्टिकल में यह वाइब्रेशन्स नहीं जा रहे हैं। तो इसीलिए प्रैक्टिकल में यह वाइब्रेशन्स तब जायेंगे जब हमारे व्यवहार अच्छे होंगे तभी वोह आत्मा भी हमें दुआएं देना शुरू करेगी। हम खाली शुभ भावना देते हैं लेकिन वोह रेतुर्न में हमें दुआएं दे देंगी। इतनी पावरफुल रीती से वोह वापिस आता है हमारे पास। माना हम जब शुभ भावना हमारे कर्म व्यवहार में देते हैं तो वोह दुआएं लेकर के वापिस आती है इतना पावरफुल रीती से हमारे तरफ वापिस आती है। और वही दुआएं अंतिम समय हमारे लिए एक लिफ्ट का काम करेगा जो कई प्रकार कि परिस्थियों को पार करना वोह हमें मदद करेगा नहीं तो अटक जायेंगे। और तब व्यक्ति को सचमुच जीवन में ऐसा लगेगा कि यह क्यूँ मेरी गाडी अटक गयी है, हमने तो किसी के लिए ऐसा सोचा नहीं, किया नहीं फिर यह गाडी कैसे अटक गई। यह अटक इसीलिए गई क्यूँकि कर्म में व्यवहार में नहीं था।

बाबा कहते हैं कि ब्रह्मणो का विशेष कर्तव्य येही है कि बस एक ही अपने अंदर में भावना रखो कि हम दाता के बच्चे हैं हमें देना है और देते जाओ। जो आपके पास देने कि सम्भावना है वोह देते जाओ कोई चीज वास्तु कि आस नहीं है दुनिया के लोगो को हर इंसान आज अगर प्यासा है भूखा है तो वोह है स्नेह का, मधुर व्यवहार का उसी का प्यासा और भूखा है और जब कोई प्यार से उसके साथ व्यवहार कर देता है तो उस आत्मा को अंदर में ठंडक मिलती है राहत मिलती है और तब वोह झुकेगा वोह इष्ट के रूप में समझेगा आपको। तो अब बाबा कहते हैं इष्ट के स्वरूप का साक्षात्कार क्यूँकि अभी पड़दा उठने का समय होने लगा है और अगर हम मूर्तियां तैयार ही ना हो तो किसका साक्षात्कार करेंगे लोग? भगवान् बाप हमसे प्रत्यक्ष होगा तो हर एक ब्राह्मण का चेहरा कितना खुशनुमा दिखाई देना चाहिए।

खुशी बाटों येही चीज चाहिए दुनिया कि आत्माओं को, जितना किसी को खुशी दे सकते हैं। ऐसे वचन ना निकले जो किसी के दिल को तकलीफ पहुँचे लेकिन ऐसे वचन निकले जो किसी को खुशी मिले, आनंद मिले, उमंग उत्साह मिले

तब सम्पूर्णता हमारे नजदीक आएगी और हम उस प्रत्यक्षता के परदे को उठाने के लिए निमित्त बनेंगे और बाबा हमारे द्वारा वोह कार्य कराएगा। बाबा को इसीलिए १०८ आत्माएं ऐसी चाहिए जो प्रत्यक्षता के निमित्त बन जायेगी और निमित्त बनने का भाग्य बहोत बड़ा है। तो कम से कम हम उस १०८ में आने का प्रयत्न तो करें क्योंकि निमित्त बनना यह भी एक बहोत बड़ा सौभाग्य है। कोई आत्मा कहा भी होगी लेकिन जब प्रत्यक्षता का पर्दा उठेगा तो उसका साक्षात्कार साडी दुनियाओं कि आत्मा को होगा। यह मत समझो कि हम तो दुनिया के कोने में बैठे हैं, गांव में बैठे हैं बाबा हमारे द्वारा कैसे प्रत्यक्षता कराएगा या हम कैसे निमित्त बनेंगे? जो मधुबन में है, जो आगे है, जो बड़े है वही निमित्त बनेंगे, नहीं। दुनिया के किसी गांव में किसी भी कोने में बैठे होंगे लेकिन आपने अपने आपको तैयार कर लिया तो आपका साक्षात्कार दुनिया कि आत्माओ को बाबा कराएगा और आप उन लोगो के लिए इष्ट बन जायेंगे और तब प्रत्यक्षता का पर्दा खुलने लगेगा।

तो अब बाबा हम बच्चो से येही उमीद रखते हैं, येही एक भावना है हम बच्चो के प्रति कि हर बच्चा तैयार हो जाए उसके लिए। इसीलिए बाबा बार बार हम बच्चो से पूछते थे कि बच्चे एवर रेडी बने हो? माना यह मानसिक स्थिति हमने अपनी तैयार कि है या अभी तक अपने ही झमेले में फंसे हो, व्यर्थ में अपने ही नेगेटिविटी में यह छोटी छोटी बातें हैं अभी, यह अभी हम ब्रह्मणो को सोभा नहीं देती है। इतना ज्ञान मिलने के बाद इतने समजदार हो गए हम कि अब यह छोटी छोटी हरकते जो हैं यह बाबा को भी अच्छी नहीं लगती है और बाबा भी नहीं चाहता है कि यह हरकतो में अभी तक भी हम अपना टाइम बिताते जाए। अब बाबा चाहते हैं मेरा हर बच्चा समजदार और उस लेवल पर आजाये कि किसी ने कुछ भी बोला और माफ़ करदों। जैसे कोई अज्ञानी आत्माएं दुनिया कि आत्माएं आपके साथ कोई बुरा व्यवहार करते हैं तो आप क्या समजते हैं? येही समजते हैं ना कि अज्ञानी है बिचारा बोल रहा है ना छोडो कोई बात नहीं शुभ भावना दे दो। तो अज्ञानी के प्रति आप लड़ने नहीं जायेंगे या उसके प्रति बोलने नहीं जायेंगे कि उसने ऐसा क्यों कहा? उसकी बात फिल नहीं करेंगे क्यों कि आपको पता है वोह अज्ञानी है। लेकिन ऐसी ही हरकत अगर किसी ज्ञानी ने कर दिया तो आप उसको क्षमा कर सकते हैं? उस समय भी यह समझो कि वोह उसके स्वभाव संस्कार से वोह कितना मजबूर है कि छूट ना चाहते हुए भी वोह छूट नहीं पाया है तो उसको मेरी मदद कि आवश्यकता है, तो उस ज्ञानी व्यक्ति के प्रति के यह हमारे ही परिवार का सदश्य है उसको मेरे सहयोग कि आवश्यकता है। तो आपके शुभ भावना का दान उसको मिलेगा तो हो सकता है कि वोह उसके उस संस्कार से भी मुक्त हो करके ऊपर उठ जाए। जैसे किसी कि टायर फंस गया हो, कीचड़ में निकल नहीं रहा हो, छींटे उड़ा रहा है चारो तरफ वोह, जैसे जैसे टायर घुमाते हैं, फंसा हुआ है ना? तो उसको एक धक्का दे दीया तो निकल जाता है तो चल पड़ती है वोह गाड़ी। तो इसी तरह वोह आत्मा भी मजबूर है अपने संस्कार से कहीं ना कहीं फंसा हुआ है इसीलिए वोह कीचड़ उछालने का काम कर रहा है तो उसके प्रति रहम आएगा या उसके प्रति और बुरी भावना आएगी। उसको भी एक लिफ्ट दे देने कि आवश्यकता है, सहयोग कि आवश्यकता है। अगर हम वोह सहयोग दे देते हैं, शुभ भावना का ही सहयोग चाहिए, या उमंग उत्साह का सहयोग चाहिए और वोह दे दिया तो क्या वोह पुरुषार्थ में आगे नहीं बढ़ेगा? और वोह बढ़ जाएगा तो जिंदगी भर आपको दुआएं नहीं देंगा? गाली थोड़े ही देंगा बाद में वोह, आगे बढ़ने लगेगा तो हमेशा के लिए येही समझेगा कि इस व्यक्ति कि भावना से मैं आज यहाँ तक पहुँच गया, तीव्र पुरुषार्थ कर पाया तो वोह हमेशा के लिए आपको दुआएं देंगा कि मेतो फंसा पड़ा था अपने स्वभाव संस्कार के अंदर, सब ने मुझे रिजेक्ट कर दिया, सब मेरे से दूर भागे लेकिन यह व्यक्ति है जिसने आ करके मुझे लिफ्ट दे दी, मदद दे दी और मुझे बहार निकला। तो थोड़ी सी सहयोग कि आवश्यकता है वोह दे दो तो देखो किस तरह से वोह तीव्र पुरुषार्थ करने लगे। और उसके तीव्र पुरुषार्थ को देख करके जैसे गाड़ी वोह कीचड़ से निकल जाती है तो फ़ास्ट भागती है ना? तो फ़ास्ट भागने लगेगा। उसको फ़ास्ट भागते हुए

देख कर के आप पीछे नहीं रहेंगे आप उससे भी आगे जायेंगे यह गेरन्टी है बाबा कि। क्यूंकि बाबा भी जब यह देखता है कि इसने इस आत्मा के स्वभाव संस्कार को ना देख करके फिर भी सहयोग दिया तो वोह आत्मा महान हो जाती है, बाबा के जैसे दिलतखतनशीन हो जाती है, वोह आत्मा को विशेष बाबा प्यार करता है। सूक्ष्म में महसूस होता है कि बाबा मुझे विशेष प्यार कर रहा है। तो यह शुभ भावना शुभ कामना देना।

कोई फंसा है, गाली दे रहा है उसको खाली इमर्ज करके में यह करती रहूँ लेकिन उसको किसी तरह से मदद ना करूँ तो यह शुभ भावना नहीं है। तो शुभ भावना का मतलब है कि थोड़ी उसको लिफ्ट चाहिए वोह दे दो तो वोह हमेशा के लिए थैंक्स मानता है। इसीलिए शुभ भावना देने के लिए अंदर कि स्थिति भरपूरता कि चाहियो, अंदर कि स्थिति जितनी भरपूर होंगी तो हमारा स्वरूप संतुष्टता का होगा। हमें खास समय निकालने कि भी आवश्यकता नहीं चलते फिरते हर कर्म करते भी हमारे पाजिटिविटी के वाइब्रेशन्स निरंतर फैलते जाए। यह है शुभ भावना शुभ कामना। स्वयं के प्रति, दुसरो के प्रति, प्रकृति के प्रति निरंतर उसको प्रवाहित करते हुए बहते रहने दो। यह बाबा हम बच्चो का स्वरूप देखना चाहते है। तैयार हो?

-: ओम शांति :-

-: ज्ञान रत्न :-

- ✓ जिस क्वालिटी के संकल्प होंगे वैसे ही भावना बनती जाती है और वोह भावनाएं वाइब्रेशन्स के रूप में प्रवाहित होती है।
- ✓ किसी के प्रति हमारी भावना संकल्प नेगेटिव हो या व्यर्थ हो और फिर हम कहें कि हम शुभ भावना कर रहे हैं यह सम्भव नहीं है।
- ✓ अगर देह अभिमान में होंगे, देह भान में भी होंगे तो शुभ चिंतन नहीं चल सकता है, शुभ चिंतन तभी चलेंगा जब मेरी आत्मिक स्थिति होंगी, आत्म अभिमानी स्थिति में होंगे या देहि अभिमानी स्थिति होंगे तो ही शुभ चिंतन अपने आप चलेंगा।
- ✓ बाबा कहते हैं कि जो भी सामने आये उसको आत्म भाव से देखो आत्मा समज करके देखो तो आपकी भावनाएं स्वतः प्रवाहित होंगी।
- ✓ इसीलिए जितना हमारे पास ज्ञान के खजाने के स्टॉक है अंदर में, यह खजाना जितना भरपूर होगा उतना हम अपने संकल्पो को जिस दिशा में मोड़ना चाहे आराम से मोड़ सकेंगे और उतना स्पिरिचुअली हेल्थी रहेंगे।
- ✓ बच्चे आप के जड़ चित्र भक्ति में भी सबकी मनोकामना को पूर्ण करने वाले हैं इसीलिए लोग शुभ भावना से आते हैं, कामनाएं लेकर के आते हैं अगर वोह जड़ चित्र कर सकते हैं कलयुग अंत तक तो आप तो चैतन्य में।
- ✓ बाबा अभी हम बच्चो से येही चाहते हैं कि वाणी द्वारा भी किसी का उमंग उत्साह बढ़ाओ, किसी को हिम्मत दो, किसी को साहस प्रदान करो, निर्भय बनाओ। वाणी के अंदर ऐसी भासना एक दूसरे के प्रति देना शुरू कर दो और इसी तरह कर्म या व्यवहार के अंदर भी किसी को भी बहोत अच्छी तरह सहयोग दें, स्नेह दें यह देने आरम्भ करेंगे इसी का नाम है शुभ भावना।
- ✓ बाबा कहते हैं कि ब्रह्मणो का विशेष कर्तव्य येही है कि बस एक ही अपने अंदर में भावना रखो कि हम दाता के बच्चे हैं हमें देना है और देते जाओ।